गोविभा

गोविज्ञान भारती का
संदेशवाहक मासिक

वर्ष : 11 • अंक : 1 | सम्पादक : नरेन्द्र दुबे, डॉ. पुष्पेन्द्र दुबे 20 अप्रैल, 2013

विश्व राज्य का स्वप्न

श्रीअरविंद

हमें अपने आप से यह पूछना होगा कि एक एकीकृत विश्व-राज्य के निर्माण के फलस्वरूप मनुष्य जाति के जीवन को क्या लाभ और क्या होनी होगी। तब और अब में जो महान् अंतर है उसके लिए पूरी छूट देते हुए भी, संभवत: परिणाम अपने सार-रूप में उन्हीं के समान होंगे जिन्हें हम प्राचीन रोमन साम्राज्य में देखते हैं। लाभ की दृष्टि से देखा जाए तो सर्वप्रथम एक बड़ा लाभ यह होगा कि विश्व की शांति सुनिश्चित हो जाएगी। आंतरिक विघ्नों और उपद्रवों से यह पूर्ण रूप से सुरक्षित न भी हो सके, किंतु यदि कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न एक हद तक स्थायी रूप से सुलझा लिये गये तो यह गृह-युद्ध की कभी-कभी होने वाली ऐसी उग्रताओं को तो दूर कर देगी, जिन्होंने पुरानी रोमन साम्राज्यीय अर्थ-व्यवस्था को उद्वेलित कर दिया था और फिर अब भी यदि कुछ उपद्रव हुए तो ये सभ्यता के व्यवस्थित ढांचे को इस प्रकार से अस्तव्यस्त नहीं कर देंगे कि फिर से सभी चीजों को एक महान् आमूल और उग्र परिवर्तन से गुजरना पड़े। और शांति सुनिश्चित हो गई तो सुख और सुविधा की अतुलनीय वृद्धि हो जाएगी। मनुष्य जाति की संयुक्त बुद्धि, जो अब खंडित होकर नहीं बल्कि एक होकर काम कर रही होगी, अनेक विशिष्ट समस्याओं को सुलझा देगी। जाति का प्राणिक जीवन एक ऐसी सुनिश्चित और बुद्धिसंगत व्यवस्था में बंध जाएगा जो सुविधापूर्ण, सुनियंत्रित तथा ज्ञानसंपन्न होगी, इसके साथ एक ऐसा संतोषजनक यंत्र-विन्यास होगा जो यथासंभव कम संघर्ष, उपद्रव और भय-जोखिम की आशंका के साथ समस्त कठिनाइयों, आवश्यकताओं और समस्याओं का समाधान कर देगा। आरंभ में एक महान् सांस्कृतिक और बौद्धिक विकास दृष्टिगोचर होगा। विज्ञान मनुष्य जाति की उन्नति, ज्ञान-वृद्धि और यांत्रिक निपुणता के लिए अपने आपको संगठित करेगा। संसार की विभिन्न संस्कृतियां - जो अब भी पृथक सत्ताओं के रूप में अपना अस्तित्व रखती है - अधिक घनिष्ठ रूप से विचारों का आदान-प्रदान ही नहीं करेंगी बल्कि अपने संचित लाभों को एक ही कोष में जमा कर देंगी और कुछ समय के लिए विचार, साहित्य एवं कला के क्षेत्र में नये उद्देश्य और पूर्ण संपर्क में आयेंगे, एक ऐसा महत्तर पारस्परिक सद्भाव विकसित कर लेंगे जो झगड़े, घृणा और द्वेष के अनेक वर्तमान आकस्मिक कारणों से मुक्त होगा और यदि वे एक ऐसे भ्रातृभाव तक न भी पहुंचे, जो केवल राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मेल से नहीं प्राप्त हो सकता, तो उससे मिलती-जुलती किसी चीज अर्थात पर्याप्त रूप से एक दयापूर्ण संबंध और आदान-प्रदान तक तो पहुंच ही जाएंगे। मनुष्यजाति के इस विकास में एक अभूतपूर्व वैभव, सुख-सुविधा और मृदुलता होगी और इसमें कोई संदेह नहीं कि उस समय कोई महान् कवि जनसाधारण की या राज्य की भाषा में - क्या हम यूं कहें कि एस्पेरेंतो में? विश्वासपूर्वक स्वर्णयुग के आगमन के विषय में गा उठे अथवा यही घोषणा कर दे कि यह युग सचमुच ही आ गया है और सदा स्थायी रहेगा। विश्व-राज्य एक स्वतंत्र जनतंत्रीय व्यवस्था होगा, स्वाधीनता का गला घोंटने वाला साम्राज्य या निरंकुश राज्य नहीं, और क्योंकि स्वाधीनता और उन्नति आधुनिक जीवन का सिद्धांत है, कोई भी ऐसा विकास जो इस सिद्धांत के विरुद्ध जाएगा, सहन नहीं किया जाएगा। किंतु इस सबमें हमें जो कुछ भी प्राप्त हुआ प्रतीत होता है वह वस्तुत: सुरक्षा नहीं है।...जनतंत्र किसी प्रकार से भी स्वाधीनता का निश्चित परिरक्षक नहीं है, बल्कि हम आज देखते हैं कि जनतंत्रीय शासन प्रणाली वैयक्तिक स्वाधीनता के एक ऐसे संगठित विनाश की ओर स्थिर भाव से बढ़ रही है जिसका पुरानी कुलीन और राजतंत्रीय प्रणालियों को स्वप्न में भी विचार नहीं आ सकता था। यह हो सकता है कि स्वेच्छाचारी उत्पीड़न के जो उग्रतर और क्रूरतर रूप उन प्रणालियों के साथ जुड़े हुए थे उनसे जनतंत्र ने उन भाग्यशाली राष्ट्रों को मुक्त अवश्य कर दिया है जिन्होंने शासन के उदार रूप प्राप्त कर लिए हैं, और यह नि:संदेह एक बड़ी प्राप्ति है।

सम्पादकीय

पुरुषार्थहीन समाज के निर्माण में लगी सरकारें

भारतीय संस्कृति में पुरुषार्थ की अवधारणा अप्रतिम है। ये चार हैं : धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। व्यक्ति और समाज की आजादी तभी तक कायम है, जब वह पुरुषार्थ में संलग्न है, जैसे ही वह लोभ, लालच और स्वार्थ के वशीभूत हो पुरुषार्थ किसी ओर को सौंप देता है, व्यक्ति, समाज और यहां तक कि देश गुलामी की ओर अग्रसर हो जाता है। आज सरकारें व्यक्ति और समाज के पुरुषार्थ को अपने अधिकार में करती जा रही हैं। किसी भी समाज पर तभी तक शासन किया जा सकता है जब तक वह समाज सरकार आश्रित अथवा परावलंबी है। यद्यपि हम स्वयं को धर्मनिरपेक्ष देश बताने में कोई कमी नहीं रहने देते, परंतु हमारी सरकारों के धर्म में दखल देने के अनेक उदाहरण मौजूद हैं। सरकारों ने अपना स्वधर्म छोड़कर समाज द्वारा किए जाने वाले कामों को ओढ़ लिया है। धार्मिक आधार पर हजारों की संख्या में किए गए अतिक्रमण हटाने में सरकारों की रुचि नहीं है, लेकिन वह लोगों को तीर्थ-यात्रा कराने में पुण्य प्राप्ति का अनुभव कर रही है। एक ओर तो जहां हम यह बात कहते नहीं थकते कि धर्म बिलकुल निजी विषय है, उसमें किसी की दखलदांजी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। वहीं दूसरी ओर सरकारों के इस अधार्मिक कृत्य के विरोध में समाज मौन है। कहां तो हम अपने परिचितों के तीर्थयात्रा पर जाने के दौरान स्वयं की ओर से प्रसाद चढ़ाने के लिए अपनी जेब ढीली करने में देरी नहीं करते और कहां हम सरकारी राशि से तीर्थयात्रा करने में गौरव महसूस कर रहे हैं। दूसरा पुरुषार्थ अर्थ अर्थात स्वयं के श्रम से आजीविका जुटाने को भी सरकार ने ले लिया है। बिना हाथ-पैर हिलाये सीधे लोगों के खाते में राशि देने का क्या मतलब है ? एक तरफ तो सरकार ने अपनी नीतियों से रोजगार के अनेक छोटे साधनों को छीन लिया तो दूसरी तरफ वह उन्हें गरीब बताकर और बनाकर शुद्ध तरीके से आजीविका की इच्छाशक्ति को भी छीन रही है। सुंदर योजनओं की भयावह स्थिति यह है कि बिना काम किए भी पैसा मिलता है, जबकि भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है 'बिन श्रम खाये चोर कहाये'। तीसरा पुरुषार्थ काम है। सरकारों की योजना यह है कि काम का उपभोग तो जनता करे, उससे होने वाली संतानों की देखभाल सरकार करेगी। एक प्रदेश सरकार तो और आगे निकल गई है। यदि कोई परिवार बच्चा गोद भी लेगा तो सरकार की ओर से उस परिवार को एक हजार रुपये मासिक दिया जाएगा। सरकारों की योजना तो ऐसी है कि बस संतान पैदा करने की जिम्मेदारी निभा लो, बाकी सब सरकार देख लेगी। उसकी शिक्षा-दीक्षा से लेकर विवाहादि तक सब कुछ सरकार करेगी। वृद्धावस्था में तीर्थयात्रा भी करा देगी। चौथा पुरुषार्थ मोक्ष है। हमारे यहां कहावत है बिना मरे स्वर्ग नहीं मिलता। अभी सरकार की दृष्टि इस पुरुषार्थ पर नहीं गई है अन्यथा वह मोक्ष का टिकट काटने से भी परहेज नहीं करेगी। जो काम समाज को करने थे, वे सारे सरकार ने ले लिए हैं। सरकार द्वारा चलायी जा रही मध्याह्न भोजन योजना पर अनेकानेक आक्षेप लगते रहे हैं, वहीं सिख धर्म में सैकड़ों वर्षो से लंगर परंपरा कायम है। उसे समाज ने सरकार को नहीं सौंपा बल्कि समाज ने अपने हाथ में रखा। दूसरी ओर भंडारा शब्द में धार्मिक भाव भरा हुआ था, परंतु जब से राजनीति ने इस शब्द का स्पर्श किया है, यह दूषित हो गया है। जब भी समाज ने अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह उचित रीति से नहीं किया है, तब वह गुलामी की ओर आगे बढ़ गया है। आज ऐसा कोई क्षेत्र नहीं बचा है जहां सरकार न हो। भारत को यदि उसके गौरवशाली पद पर पुन: प्रतिष्ठित करना है तो इस सरकारवाद से मुक्ति पाए बिना उद्धार नहीं है।

- डॉ. पुष्पेन्द्र दुबे

इस अंक में ...

- देवनार सत्याग्रह के 30 वर्ष : कुछ प्रश्न–कुछ उत्तर
- सत्याग्रह की तैयारी
- गोरक्षा सत्याग्रह प्रारंभ
- प्रेरक कहानियाँ
- गोबर खाद से मिलती स्वच्छ गो ऊर्जा

देवनार सत्याग्रह के तीस वर्ष : कुछ प्रश्न : कुछ उत्तर

- सर्वनारायण दास

मेरे दिमाग मे कुछ सवाल, कुछ विचार उमड़ते-घुमड़ते रहते हैं। ये सवाल कोई नये नहीं, लेकिन रह-रहकर ये धक्के देते रहते हैं। इनके बारे में किसी को बताने जाऊं, तो संभव है कि बेमतलब वा अनर्गल incoherent माना जाय। लेकिन अपने भीतर तक ही रख पाना बहुत भारी जा रहा है। इसी कारण आज मैं पत्र लिखने बैठा हूं। सवाल का केंद्र-बिंदु तो देवनार सत्याग्रह ही है। लेकिन सवाल का व्याप इतना बड़ा हो जाता है कि केंद्र बिंदु कहां - यह गौण हो जाता है। यह सारा लेखन Thinking aloud ही है। बाबा के निकट संपर्क में मैं तभी आता गया, जब वे सूक्ष्म में प्रवेश कर चुक थे। स्वभावत: मैं अपने आधार से ही उनका आकलन करने की कोशिश करता हूं। सूक्ष्म प्रवेश से पूर्व बाबा के जो जीवन चित्र हमारे सामने हैं, उनमें तमाम गूढ़ताओं के बीच एक तर्कयुक्त प्रवाह स्पष्ट दीखता है। किंतु शेषकाल बिलकुल baffling ही है। दीखता यही है कि उन्होंने अपने यश को, कीर्ति को - खुद अपने को भी मिटा डालना अपना मिशन बना लिया था। बिहार आंदोलन और आपातकाल में उन्हें इस मिशन में अच्छी खासी कामयाबी भी मिली। कीर्ति तो काफी धुल गयी, लेकिन विनोबा बचा रहा - एक हस्ती जिसे स्वीकार करना ही पड़ता था। आपातकाल पूर्ण सूर्यग्रहण, खग्रास की तरह आया, लेकिन विनोबा आखिर निकल बाहर आ गये। अवश्य ही उनकी कीर्ति में वेध लगा ही रहा - पुरानी चमक लौटकर नहीं आयी। वैसे देखने वाली आंखों ने बाद में देख लिया। विनोबा का stand more than vindicated निकला। यह चीज सिर्फ बिहार आंदोलन के नतीजों से ही जाहिर नहीं हुई, बल्कि वे जिन खतरों से, संकटों से आगाह कर रहे थे, वे सब आज बिलकुल सामने खड़े हो गये हैं। देश की एकता खतरे में है, बाबा का इन दिनों राष्ट्रीय संदर्भ में नहीं, अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में चिंतन चलता है, जिसमें वह यह देखता है कि भारत में एक स्थिर केंद्र बना रहे, यह जरूरी है। जब तक भारत, पाकिस्तान और बंगलादेश के आपस में मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित नहीं हो जाते, तब तक हिंसक आंदोलन ही नहीं, अहिंसक आंदोलन भी सरकार के खिलाफ नहीं चलने चाहिए आदि-आदि। उस समय ये बातें वास्तविकता से ज्यादा कल्पनाभरी प्रतीत हो रही थीं, लेकिन आज हम पा रहे हैं कि देश के टुकड़े-टुकड़े हो जाने का खतरा प्रत्यक्ष है और वह दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। खैर, इन बातों को अभी छोड़ हम आगे बढ़ें। विनोबा जो बच रहा था, उसे मिटाने का काम बाबा को पूरा करना था। और यह काम उन्होंने गोहत्याबंदी कार्यक्रम और देवनार सत्याग्रह के जरिये पूरा किया दीखता है। यह सारा प्रकरण ऐसा ही है कि विनोबा को मानो black hole ने गड़प कर डाला हो। उनके अपने जनों को भी उनके जीवन पर कुछ लिखना-बोलना हो, तो गोहत्याबंदी और देवनार सत्याग्रह वाले भाग पर पहुंचकर इससे जैसे-तैसे पीछा छुड़ाकर एकदम ब्रह्मनिर्वाण पर आ जाना पड़ता है। बाबा ने इस तरह स्वयं को big zero बना लिया, ऐसा हम पाते हैं। यह सच है कि देवनार सत्याग्रह के पच्चीस (अब तीस) साल हो चले और यह काफी विद्रूप भी हो गया दीखता है। जड़ता तो अप्रतिम ही कही जायेगी। बाहरी लक्षणों से ऐसा कोई भी आधार नहीं दीखता, जिससे कि इसके चलते रहने का सपोर्ट किया जाय, चलाते रहने का औचित्य सिद्ध किया जा सके। चलते रहने में न्यूटन का law of inertia जड़त्व का सिद्धांत ही आधार प्रतीत होता है। तथापि मुझे यह कहने की हिम्मत कभी नहीं हुई कि देवनार सत्याग्रह बंद कर देना चाहिए। मेरा कहना यही रहा कि बाबा से पूछा जाय। मेरा विष्वास रहा है कि अगर हम उनसे पूछते, तो अवश्य ही उत्तर मिलता। seek and ye shall find Ask and ye shall get ऐसे वचन तो अपनी जगह हैं ही। लेकिन यह बात बनी नहीं। खैर, मेरे मन के किसी कोने में यह हिचक बनी रही है कि देवनार सत्याग्रह की अप्रतिम जड़ता में कुछ गूढ़ता हो सकती है। यह मेरी खुद की ही मूढ़ता हो, यह भी संभव है। तथापि वह रही है, और उसे इस तर्क से सिंचन मिलता रहा कि बाबा चाहते होते, तो बंद करवा ही सकते थे। जब वे संथारा पर थे, तब दो बार उन्होंने काका को बुलवाया और दोनों बार सिर्फ इतना ही कहा, ''बाबा थक गया है।'' देवनार सत्याग्रह के विद्रूप हो जाने की जो बात है, मेरे मन में यह विचार उठता है कि बाबा को क्या पता नहीं था कि कैसे असंभव काम में वे अपने लोगों को झोंक रहे हैं, जोकि थोड़ी कुछ उछलकूद भले कर लें, लेकिन उनकी कोई औकात नहीं। वे यह बोझ ढोते रह सकें, वह ताकत नहीं है। वे (बाबा) तिनके पर पहाड़ का बोझ ही डाल रहे थे, तब तिनका उस बोझ में भला कैसे साबित रह पाता ? लेकिन अपनी उस हिचक का कुछ खुलासा मिलने जैसा भास या भ्रम अभी हो रहा है। ओम् पूर्णमद: पूर्णमिदं' की ध्वनि में 'शून्यमद: शून्यमिदं' - देवनार सत्याग्रह शून्य का शून्य में संचार है, यह कहा जा सकता है। अब शून्य का शून्य में जो संचार है, उसमें भला कौन साथ दे सकेगा ?

वही जो शून्य हो चुका है। यह शून्य या तो चैतन्य होगा या फिर जड़ता का। जो शून्य नहीं हो पाये, ऐसों का भी उपयोग भगवद्योजना में होता है। वस्तुत: जो चैतन्य का शून्य बन चुके, उनके लिये योजना का प्रयोजन ही क्या - सिवाय इसके कि इनमें से कुछ को अशून्यों के उद्धार के लिए, उन्हें भी शून्य बनाने के लिए समय-समय पर भेजा जाय ? आशय यह कि जड़ता का भी दैवी योजना में एक प्रयोजन है। सामान्यजनों की बात ही क्या, महापुरुषों की दृष्टि भी किसी हेतु विशेष की पूर्ति के लिए आच्छन्न, आवरित हो जाती है। पौराणिक गाथाओं की बातें तो बहुत दूर की है। हम सबों के सामने बापू की यह स्वीकारोक्ति प्रत्यक्ष ही है कि 'भगवान ने हिंदुस्तान की आजादी के लिए मेरी आंखों पर पट्टी बांध दी थी।' स्पष्ट है कि अज्ञजनों और महापुरुषों की दृष्टि पर होने वाले आवरणों में गहरा गुणात्मक अंतर रहेगा। अलग-अलग कोटियां होंगी। जिसकी चर्चा यहां अनावश्यक दीखती है। सवाल का निचोड़ यह निकलता है कि अपन ऐसे साथी जो एक साथ अर्द्धचेतन और अर्द्धजड़ हैं, उनका क्या होगा ? वे या तो चेतन, पूर्ण चेतन में बदल जायें या फिर पूरे जड़ हो जायं। बुद्धि उन्हें तकलीफ न पहुंचाये ताकि वे टिके रह सकें। मेरे मन में वैसी हिचक या शंका रहने के और भी कुछ कारण हैं। सुशीला बहन ने बताया था कि बाबा ने कहा है, 'बाबा बापू की तरह अचानक नहीं चल देगा।' यानी बाबा ठीक-ठाक, पुख्ता इंतजाम लगाकर गये हैं। मैंने खुद ही तूफान-यात्रा के समय कार्तिक पूर्णिमा (1965) को प्रात: मंगलबेला में कहते सुना - ''बाबा प्रभु का छोड़ा हुआ बाण है। वह लक्ष्यवेध करके ही गिरेगा।' एक क्षण रुककर फिर आगे कहा - 'पहले भी गिर सकता है, लेकिन वापस नहीं लौट सकता।' प्रभु रामचंद्रजी का बाण लक्ष्य भला कैसे चूक सकता है। तब मैं सोचा करता हूं कि कौन-सा लक्ष्य कैसे वेध किया गया, बाबा ने पुख्ता इंतजाम के तहत क्या सब किये होंगे - हांलाकि यह पक्का है कि वह मेरी समझ में आने से रहा। आखिर देवनार सत्याग्रह में इतनी जड़ता क्यों ? भला ऐसी कौन-सी दैवी योजना हो सकती है ? इसका एक जवाब मेरे दिमाग में यूं आया करता है। हम सब जानते हैं कि अतिशय (excessive) ठण्ड के दिनों में मेंढक आदि कुछ प्राणी हायबरनेशन में चले जाते हैं। तब श्वास-प्रश्वास क्रिया भी बंद रहती है, मृतवत् हो जाते हैं। शीतकाल बीतने पर पुन: जी उठते हैं, अपना कामकाज करने लग जाते हैं। चार साल पहले इधर बिहार में अत्यंत कड़ाके की ठण्ड पड़ी थी, जैसी कि आमतौर से नहीं पड़ती थी। उस ठण्ड में अपने बिलों में जा रहने वाले सांपों से भी बिल के अंदर की ठण्ड सहन नहीं हो पायी थी। बड़े-बड़े विषधर नाग, सांप सब बिल से बाहर जान बचाने के लिए निकल आये। लेकिन बाहर तो और भी भयानक ठण्ड थी। नतीजन वे ठिठुरकर मर गये या फिर वे बेहोशी की हालत में लोगों द्वारा मार डाले गये। अगर उनमें भी हायबरनेषन में चले जाने की शक्ति होती, तो अवश्य ही बच गये रहते। मेरा मन कहता है कि भौतिक जगत की भांति आध्यात्मिक जगत में भी हायबरनेशन जैसी कोई चीज होगी और आज वह लाजिमी हो गयी दीखती है। श्री अरविंद के शब्दों में आज की दुनिया बद से बदतर, बदतर से बदतम और बदतम से भी बदतर (from bad to worse from worse to worst and from warst ot worse than worst if it can be said so) होने की ओर है। इस डरावने हालात की ओर नजर डालने की हिम्मत नहीं होती। समस्याओं का स्वरूप इतना विराट और संकुल हो चुका है कि कहीं ओर-छोर, सीमा-परिधि नजर नहीं आती। या तो एकसाथ सबका उद्धार हो, सामूहिक मुक्ति हो या फिर सब एकसाथ खत्म हो जायें। Mother के अनुसार समस्त आसुरी शक्तियां अपने संपूर्ण वेग के साथ पृथ्वी पर उतर पड़ी हैं और तांडव करने लग गयी हैं। दूसरी ओर दैवी शक्तियां भी आसुरी शक्तियों को पराभूत करने में जुट पड़ी हैं। इन दोनों के बीच भारी कशमकश चल रही है। सौभाग्य समझें या दुर्भाग्य, हम सब ऐसे ही क्षण पृथ्वी पर आ पैदा हुए हैं। This way or that way दुनिया को जाना ही है। किसी का कुछ चलने का नहीं। अवश्य ही तब ईश्वर का अपना कुछ विशेष हेतु, मकसद होना चाहिए। इस सारी हालत में हमारा क्या रोल, क्या उपयोग ? बाबा कहते हैं, ''हमें यानी इस समाज को एक अवतार कार्य प्राप्त हुआ है। अब समूचे समाज को वह कार्य करना है। समाज इंकार करता हो, तो भी उसे अतिमानस की अवस्था में ही जाना होगा, अन्यथा वह खतम हो जाएगा। इन दो के अलावा तीसरी भूमिका उसके लिए बची नहीं है। विज्ञान की प्रगति अब रुक नहीं सकती। इसलिए हमें (इस समाज को) अपने मन को विज्ञान के अनुकूल बनाना होगा और अगर वह शक्ति हममें नहीं आये, तो समझना होगा कि ईश्वर मानव का लय करना चाहता है।' मैं विस्मयपूर्वक अपने से पूछता हूं - क्या सृष्टिकर्ता ने सचमुच हमें इस वास्ते चुन लिया है, हमसे वह कुछ करवाना चाहता है? विश्वास कर पाना मुश्किल हो जाता है। जहां तक अतिमानस की बात है, बाबा और श्रीअरविंद, दोनों इसकी बात करते हैं। दोनों में क्या फर्क है, मुझे पता नहीं चलता। पता चल पाने की मैं आशा भी नहीं रखता। इतना ही ध्यान में आ पाता है कि मानवी चेतना को नया आयाम मिलना है, पूरे मानव समाज को उस भूमिका तक आरोहण करना है।

- क्रमशः

पत्र संपदा
5-1-1982

सत्याग्रह की तैयारी

पूज्य बाबा,

सादर प्रणाम!

3 तारीख को दादर पहुंचे। अण्णा जाधव, तुलसीदास विश्राम की ओर से नलिन भाई मेहता और एक भाई स्टेशन पर हमें लेने आए थे। शांताश्रम पहुंचे। मित्रों की भेंट हुई। तुलसीदासजी, बद्रीभाई मिले। उत्सुकता से सारी बातें सुन लीं। यहां के निवास आदि के प्रबंध का यकीन दिलाया। हर तरह से मदद करने की तैयारी बतायी। यकायक बाबा ने यह निर्णय कैसा लिया गया, इसका सभी को अचरज हुआ। यह कैसे हुआ इसका तो कोई उत्तर हममें से किसी के पास था नहीं। अण्णा ने प्रश्न पूछे और उसमें से सत्याग्रह निकला, यह तो कोई उत्तर नहीं कहा जा सकता। तुलसीदास जी ने माना कि बाबा को यह ईश्वरी प्रेरणा है। बद्रीनारायणजी ने भी वही बात मान ली। श्री चिमणभाई चकुभाई से मिला। हमारी मांग युक्तिसंगत है। यह बात उन्हें बतायी। बाबा ने सुप्रीम कोर्ट मर्यादा लांघी है ? उन्होंने पूछा, मैंने कहा, जी हां। और उसका कारण वे जाने परंतु मेरा कारण यह है कि जिस कारण सुप्रीम कोर्ट ने गाय को इस देश में अवध्य ठहराया है, उन्हीं कारणों ने गत कई सालों के अनुभव से यह निश्चित करवाया कि बिना बैलों को अवध्य किए भारत का उत्तम बैल भी कसाई की छुरी से बचेगा नहीं। मैंने कहा गोधन नष्ट हो जाएगा। यदि बैल की कतल पर पूर्ण पाबंदी न की जाय। उनका ही एक लेख प्रबुद्ध जीवन में था जो इस दलील की पुष्टि करता था। हमें जो पत्रक निकालना था, उसके विषय में उनकी राय चाही। उन्होंने कहा, वह छोटा हो, मुद्दों से युक्त (पॉइंटेड) हो। मराठी, गुजराती, हिन्दी भाषा में हो। यहां आने पर किसी ने कहा उर्दू में हो। देखेंगे। पोस्टर्स छापे जा रहे हैं। प्रारंभ में बाबा का आदेश, जो पवनार में लिखा गया उसे दे रहे हैं।, फोटोस्टेट के रूप में। आज धरमसी खटाव से मिलने जा रहा हूं। मुख्यमंत्री के पास यहां दो बार लोगों को भेजा। पहली बार बद्रीभाई गये, पवनार से उन्हें भेजे हुए पत्र की नकल भेजी और भेंट मांगी। आज दूसरा पत्र भेजा, जिसमें उन्हें जानकारी दी कि सत्याग्रह ग्यारह जनवरी से प्रारंभ होगा। आज के पत्र में भी तुरंत मिल सकने की बात लिखी है। सत्याग्रह प्रारंभ करने के पूर्व भेंट करना एक उचित रीति मानी जाती है, इसलिए मिलना जरूरी है। मुख्यमंत्री दिल्ली गये हैं। कब भेंट होगी, मालूम नहीं। पोस्टर बंबई शहर में सब ओर लगाना सोचा जा रहा है। आज छपाई के लिए दिये जा रहे हैं। श्री खटाव से मिलकर आया। कस्तुरबा निधि के ट्रस्टियों में से एक हैं। केवल भेंट, इतना ही उद्देश्य था। वे 7 तारीख से 28 तारीख तक एक जीप हमें देंगे। कल विद्यासागर देवनार का परिसर देखकर आये। कहां सत्याग्रह किया जा सकता है, इसका भी निश्चय कर आये। उन्हें बद्रीनारायण जी गाडोदिया ले गये थे। अण्णा जाधव भी साथ थे। तुलसीदासजी के पांजरा पोल के श्री पांडे ने सारी जानकारी दी। उनका पांजरापोल देवनार से बिलकुल नजदीक है। कल श्री देवरा, अध्यक्ष मुंबई कांग्रेस कमिटी से जाकर मिले। वे कॉरपोरेशन के मेंबर थे। उनके साथ एक मुसलमान एम.पी. बहन भी थीं। अंतुले जी से भेंट होने में देवरा जी कुछ मदद हो सकती है। विद्यासागर, तुलसीराम और कुसुम कांबली मेरे साथ थे। उनसे मालूम हुआ कि सीताराम केसरी आपसे मिलने आ रहे हैं। नवशक्ति के संपादक श्री बेहरे जी से मुलाकात हुई। वे आपके दर्शन के लिए पवनार आए थे। अच्छे विचार रखते हैं। हमारे कार्य के प्रकाशन में उनकी मदद मिलेगी। रमाकांत पाटील से उनकी दोस्ती है। महाराष्ट्र सर्वोदय मंडल की यहां बैठक थी। अंतुले हराव की चर्चा भी थी। गोसेवा संघ के दो दिन उपवास के संयोजन की भी चर्चा थी। छब्बीस जिलों में भी उपवास की योजना हो सके, इस हेतु वे प्रयत्नशील हैं। पेंटेजी का फोन कल आया था। वे आज पवनार रवाना हो रहे हैं। कल वर्धा पहुंचेंगे। कल डेनियल माजगांवकर मिले। आज मिलेंगे। मधुरावकर कल आ रहा है। इनसे क्या मदद मिल सकती है, देखेंगे। नन्दू भाई मिले। रोज आते रहेंगे। नलिन मेहता, तुलसीदास विश्राम के साथी हैं। उनकी अच्छी सहायता मिल रही है। शुक्रवार को प्रेस कांफरेंस लेने की बात सोची जा रही है। उसके लिए प्रास्ताविक पत्रक तैयार किया गया है। देवनार के निकट पड़ाव हमारा हो, इस बात के बारे में सोच रहे हैं। श्री विद्यासागर ने देवनार में जो देखा, उसका हाल इस पत्र के साथ है। कालिंदी ताई ने वहां से मेरे लिए कपड़े भेजे हैं। उसकी जरूरत थी ही। बालभाई का फोन आया था। उन्हें यहां की गतिविधि की जानकारी दी थी। सबको प्रणाम। यहां की खबरे जानने की इच्छा सभी को होती है। यह पत्र जो चाहे उसे पढ़ने के लिए देने की कृपा की जाए।

अच्युत

पत्र संपदा

गोरक्षा सत्याग्रह प्रारंभ

10-1-1982

पूज्या बाबा

सादर प्रणाम

आज तीन घंटे पदयात्रा कर शांताश्रम नानाचौक से चौपाटी गये। वहां प्रार्थना की और मोटरों से यहां लौटे। अभी घाटकूपर जा रहे हैं। यहां केवल बाहर से आने वाली सत्याग्रहियों से संपर्क रखने एवं उनका प्रबंध करने के लिए तीन लोग रहेंगे। 1 एलीगढ़कर, 2 विद्यासागर, 3 अण्णा जाधव।

मैं चार साथियों के साथ सत्याग्रह कर रहा हूं। दूसरी टोली डॉ.पटनायक और तीसरी ब्रजभूषण जी की रहेगी। आगे अल्लाह अल्लाह खैर सल्ला (कल्याण प्रार्थना)। परसों शांताश्रम में गो-प्रेमियों, कार्यकर्ताओं, बाबा के भक्तों की सभा थी। पिलाणी जी आये थे। कौशिक के पिता माता दोनों आये थे। सभी परिचित आश्रम में कई बार आये हुए, यहां सर्वोदय का काम करने वाले आये थे। दादा धर्माधिकारी भी आये। बहुत अच्छा आशीर्वाद दिया। कल की डाक से वह आपके पास भेजा जाएगा। श्री तुलसीदासजी विश्राम ने आर्थिक व्यवस्था के बारे में निश्चित किया है। नंदू भाई भी ध्यान रख रहे हैं। बद्रीनारायण जी गाडोदिया तो हैं ही। तुलसीदासजी का कृषि गोसवा कार्यालय अच्छी मदद कर रहा है। चीफ मीनिस्टर से मिलने के लिए अब मौका नहीं है, इसलिए मिलेंगे नहीं। पत्रकार परिषद में मैंने एक प्रेसनोट अंग्रेजी में दी। वहां हिन्दी में बोलने की पत्रकारों को प्रार्थना की। घंटाभर पत्र परिषद हुई। सभी सहमत होकर गये। यू.एन.आय. का प्रतिनिधि हाजिर था। पी.टी.आय. वाला आ नहीं सका। गुजराती मराठी पत्रों के प्रतिनिधि थे। खबरें आयीं उसकी कतरनें कल आप के पास रवाना की गयी हैं। नवशक्ति के संपादक बेहरे दो बार मिले। कल रात आये। सारी जानकारी मुझसे ली। आपने हमें दी हुई आज्ञा का ब्लॉक सोमवार के अंक में छापेंगे। मैंने कहा, सत्याग्रह को प्रोत्साहन देने के कारण आप पर केस होगी। बाबा के इस काम में जेल जाऊंगा तो भाग्यवान समझूंगा। मालेगांव के निकट निळोबा, गहड कुटमुटिया बहन ने करीब चार सौ गायें कतलखाने जाने वाली पकड़ी पोलिस के कैंजे में दी। डी.एस.पी. कलेक्टर के पास दौड़ी। उन्होंने हम उन कसाइयों पर केस करेंगे, कहा, परंतु यहां पुलिस सब इन्स्पेक्टर ने उसके ऊपर के अधिकारियों के हुक्म से उन कसाइयों से हम ये गायें काटेंगे नहीं, किसानों को बेचेंगे, ऐसा लिखा लेकर गायें छोड़ दीं। इस विषय में रमाकांत पाटील के कहने से मैंने एक पत्र नवशक्ति को दिया। बेहरे जी वह पत्र पहले पन्ने पर छापकर नवशक्ति में हमारे काम के समर्थन में एक अग्रलेख सोमवार के दिन यानी कल लिख रहे हैं। श्री मोहिनी चीफ मिनिस्टर के सचिव हैं। मुख्यमंत्री की भेंट मिले, इस हेतु उनसे मिलने का समय कुसुम कांबली ने तय कर रखा था। कुसुम कांबली और तुलसीराम कांबली की हमें अच्छी सहायता रही। यहां समस्या है, उनकी भी। डेनियल आदि भी मदद करेंगे। मोहिनी जी को मैंने कहलवाया (मेरी आवाज बैठ गयी है) कि मुख्यमंत्री के भेंट का प्रयत्न अब तक किया। गांधी कार्य की रीति के कारण परंतु अब गृहराज्यमंत्री के पास संदेश रख दिया है। कल मुझे उनसे मिलने के लिए समय नहीं है। कार्यक्रम तय हो चुके हैं। आप कमला ताई के भाई के पुत्र हैं, हमारे परिवार के ही हैं। इसलिए आपसे मिलना जरूर चाहता पर अब जेल से आने के बाद। अभी घाटकोपर रवाना हो रहे हैं।

स्थान : देवनार के रास्ते में : अच्युत

अपील

प्रिय मित्रों,

किसी भी वैचारिक मासिक पत्रिका का निरंतर 10 वर्षों तक प्रकाशित होते रहना गौरवपूर्ण उपलब्धि से कम नहीं है। यह आप सभी की सहभागिता और मार्गदर्शन से ही संभव हो पाया है। समाज में व्याप्त वैचारिक शून्यता की पूर्ति में **गोविभा** पत्रिका कहाँ तक सफल हुई यह तो सुधी पाठक ही बता पाएंगे। नए वर्ष में प्रवेश करते हुए गोविभा परिवार से यह अपील है कि वे इसके आजीवन सदस्य बनें। गोविभा पत्रिका की आजीवन सदस्यता राशि रु. 1,000 है। सहयोग राशि 50 रु है। सुधी पाठक **गोविज्ञान भारती** के नाम का ड्राफ्ट बनाकर डी-37, सुदामानगर, इन्दौर के पते पर भेज सकते हैं। आजीवन सदस्यता हेतु संपर्क करें- 097542-20781 **संपादक**

प्रेरक कहानियाँ

सरल सुभाव न मन कुटिलाई

महाकवि जयदेव यात्रा कर रहे थे कि एक राजा ने उनकी उपदेश-वाणी से प्रभावित हो उन्हें अच्छी रकम दान-दक्षिणा में दी। किंतु रास्ते में एक स्थान पर कुछ डाकुओं ने सारी रकम छीन ली और पकड़े जाने के भय से उन्होंने महाकवि के हाथ-पैर काट डाले एवं उन्हें कुएं में फेंक दिया।

दैववशात् वह कुआं सूखा था। इससे संत को कोई चोट नहीं आयी। उन्होंने वहीं भजन गाना शुरू कर दिया। संयोग से राजा गंधर्वसेन वहां से गुजरे, तो उन्हें कुएं में से मधुर वाणी सुनाई दी। उन्होंने संत को बाहर निकलवाया और उन्हें राजधानी ले गये। उनकी विद्वत्ता से गंधर्वसेन इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने जयदेव को अपनी पंचसभा का प्रधान नियुक्त कर दिया।

एक बार राजा ने एक उत्सव के अवसर पर भिक्षुभोज का आयोजन किया। भोजन के लिए भिक्षुओं का तांता उमड़ पड़ा। उन डाकुओं को जब इस बात का पता चला, तो ब्राह्मण का भेष लेकर वे भी वहां उपस्थित हुए। लेकिन जब उन्हें सामने जयदेव दिखाई दिए, तो उनके प्राण सूख गये - काटो तो खून नहीं। जयदेव की भी उन पर दृष्टि पड़ी। उन्होंने राजा से कहकर ब्राह्मण-वेशधारी उन डाकुओं को कुछ अधिक धन दिलाया। राजा ने अधिक धन तो दिया ही, साथ ही सेवकों को उन्हें ससम्मान पहुंचाने का आदेश भी दिया। मार्ग में सेवकों ने डाकुओं से प्रधानजी के साथ उनके संबंधों के बारे में पूछताछ की। तब उनके मुखिया ने झूठमूठ ही कह दिया - ''यह व्यक्ति महाधूर्त है। यह भी पहले हमारे समान राजकर्मचारी था, लेकिन इसके द्वारा राजकोष की रकम का गबन करने के कारण राजा ने इसे मृत्युदण्ड की सजा दी। पर हमारी अनुनय-विनय से प्रभावित हो राजा ने इसके हाथ-पैर काटने का आदेश दिया। हमें देखते ही उसने पहचानकर हमारे उपकार के बदले में विशेष ख्याल करने के लिए कहा।'' मुखिया के ये शब्द समाप्त भी न हुए थे कि अकस्मात् धरती फट गयी और वे डाकू उसने समा गये। सेवकों ने वापस लौटकर जब राजा और जयदेव से सारी बात कही, तो जयदेव को सुनकर दु:ख हुआ। वे बोले, ''मैं उन्हें उनके पाप-कर्मो से लौटाना चाहता था, लेकिन मैं इतना अभागा हूं कि उनका कल्याण करने का सामथ्य मुझमें न रहा। अब तो भगवान से यही प्रार्थना है कि वे उनके दोषों को क्षमा कर उन्हें सद्गति दें।'' ये शब्द सुनते ही दरबारियों के मुख से 'धन्य' धन्य' की ध्वनि गूंज उठी।

गुरु बिन ज्ञान न पावै कोई

घटना सिक्ख गुरु अमरदासजी के गुरु बनने से पहले की है। तब उनकी उम्र 72 वर्ष की थी। एक बार उनके यहां एक मेहमान आया। रात्रि को सोते समय उसने पूछा, ''गुरु से मिले कितना समय हुआ है ? ''गुरु'' ? मेरे तो कोई गुरु नहीं हैं,'' अमरदासजी ने जवाब दिया। ''क्या तुम्हारे कोई गुरु नहीं है ?'' पश्चातापयुक्त शब्दों में मेहमान ने पूछा। उसने आगे कहा, ''तब तो तुम्हारा अब तक का जीवन व्यर्थ गया! मुझे अगर मालूम रहता कि तुम निगुरे हो, तो मैं यहां भोजन ही न करता!'' - ऐसा कहते हुए उसने अपना सामान बटोरा और बिना विश्राम किए चलता बना।

अमरदासजी को बड़ा दु:ख हुआ कि उन्हें बुढ़ापा आ गया और उनके मन में गुरु बनाने का कभी विचार ही न आया। इसी चिंता में उन्हें नींद न आयी। सुबह जब उठे तो उन्होंने अपने भाई की बहू बीवी अमरो को गुरुवाणी पढ़ते पाय। पढ़ना समाप्त होने पर उन्होंने उससे पूछा कि वह क्या पढ़ रही थी। उसने बताया कि वह गुरु नानक साहिब की बानी पढ़ रही थी, जिनकी गद्दी पर उसके पिताजी (अंगद साहिब) बैठे हैं।

अमरदासजी ने उससे कहा कि वह उनसे भेंट करा दे। बीवी अमरो ने कहा, ''पिताजी को जब किसी से मिलना हो, तो वे स्वयं बुलाते हैं। इसलिए आपसे भेंट नहीं हो सकेगी।'' किंतु अमरदासजी तो उनसे मिलने के लिए बेचैन थे, बोले, यदि तू भेंट करा देगी और वे नाराज होंगे तो मुझ पर होंगे तुझ पर नहीं! मैं उन्हें मना लूंगा।''

आखिर मजबूर होकर वह उन्हें गुरु साहिब के पास ले गयी। उन्हें बाहर खड़ा करके जब वह अंदर गयी, तो अंगद साहिब ने कहा, ''जिन्हें साथ में लायी है, उन्हें अंदर क्यों नहीं लायी ?'' अंदर ले जाने पर उन्हें गुरु साहिब ने गुरुमंत्र क्या दिया, रूहानी दौलत से उन्हें मालामाल कर दिया, और आगे चलकर उनकी गद्दी के वे ही अधिकारी बने।

स्वास्थ्य समाचार

सर्वोदय सेवक और गोविभा के संपादक श्री नरेंद्र दुबे का स्वास्थ्य पहले से बेहतर है। उनसे भेंट करने के लिए जूनागढ़ अग्नि अखाड़ा के महंत स्वामी योगानंद महाराज आये और उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। अभी उनका निवास इन्दौर में ही है।

रजि. MPHIN/2003/11246 Postal Reg. ICD. (MP) 1106/2012-14
गोविभा 20 अप्रैल, 2013

गोबर खाद से मिलती स्वच्छ गो ऊर्जा

एडम एडलमेन

ट्रेविस फोग्लर कहते हैं कि जब डीजल इंजन चलाते हैं तो उससे निकलने वाले कार्बन से आसमान काला हो जाता है, जबकि गाय की खाद से बिलकुल स्वच्छ ऊर्जा मिलती है। पेनोबस्कॉट काउंटी मेन का फोल्गर परिवार अपने स्टोनीवेल फार्म पर नई तकनीक का प्रयोग कर रहा है जिसे काउ पावर या गोऊर्जा का नाम दिया गया है जिसमें गोबर से स्वच्छ ईंधन प्राप्त किया जा रहा है। गाय के गोबर से ग्रीन पावर नॉर्थ ईस्ट में स्थित फार्म्स में वैज्ञानिक तरीके से गोबर को ईंधन में बदला जा रहा है। इससे न केवल फार्म ऊर्जा के मामले में स्वावलंबी हुआ है, बल्कि शहर के आसपास भी बिजली दी जा रही है। यहां गोबर को मुख्य ऊर्जा स्रोत के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। इस प्रक्रिया को सामान्य तौर से 'काउ पावर' के नाम से जाना जा रहा है। इससे राष्ट्र की जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता को कम किया जा सकेगा। एक फार्म में बड़े स्तर पर चलायी जा रही डेयरी से निकलने वाले गोबर और भोज्य अपशिष्ट से बनने वाले स्वच्छ ऊर्जा से 800 घरों को रोशन किया जा रहा है। मॉर्निंग सेंटिनेल के अनुसार इस फार्म पर बनने वाली बिजली की कीमत आठ लाख डॉलर प्रतिवर्ष है। एक्सेटर एग्री एनर्जी फर्म द्वारा रिन्यूएबल एनर्जी के लिए फोल्गर फेमिली के स्टोनीवेल फार्म पर चलाया जा रहा प्रोजेक्ट पेनोबस्कॉट काउंटी, बेंगर से कुछ ही दूरी पर स्थित है। इसमें अनेक प्रकार की सुविधाएं हैं। इस प्रोजक्ट की कुल लागत साढ़े पांच मिलियन डॉलर है। इसे वर्ष 2011 में स्टोनीवेल फार्म पर लगाया गया। इसके लिए अमेरिका के कृषि और कोषालय विभाग ने 2.8 मिलियन डॉलर का अनुदान दिया। यहां रहने वाली 1800 गायों से प्रतिदिन 20 हजार गैलन गोबर खाद निकलता है। एक छोटे औजार से खाद को पम्प हाउस तक पहुंचाया जाता है। वहां से पाइप के माध्यम से परिवहन कर प्रोसेसिंग के लिए भेज दिया जाता है। एनएरोबिक डायजेस्टर्स मशीन में इसे डाल दिया जाता है। इसके अलावा अपने आसपास से टैंकर और ट्रक 8000 गैलन भोज्य अपशिष्ट का संग्रहण प्रतिदिन करते हैं। इसे वे डायजेस्टर्स में खाली कर देते हैं, जहां इसे गोबर खाद के साथ मिला दिया जाता है। डायजेस्टर्स का तापमान 100 डिग्री सेल्सियन रहता है। यह गोबर खाद में मौजूद बेक्टिरिया को बढ़ने और द्विगुणित करने का उचित तापमान है। एक्सेटर एग्री एनर्जी के अभियांत्रिकी प्रबंधक जॉन विंटल के अनुसार इस मिश्रण से बनने वाली बायोगैस में 60 प्रतिशत मीथेन और 40 प्रतिशत कार्बन डायआक्साइड गैस होती है। इस जटिल प्रक्रिया के बाद पुराना अपशिष्ट एक स्वच्छ नये ऊर्जा प्रदाता स्रोत में बदल जाता है। ऑपरेशंस मैनेजर ट्रेविस फोल्गर कहते हैं कि इस प्रकार बायोगैस से स्वच्छ ऊर्जा प्राप्त होती है। काउ पावर से अनेक अतिरिक्त लाभ हैं। हार्वेस्टिंग के समय गैस एक उप उत्पाद के रूप में हमें मिलती है। साथ ही सुगंधित खाद से फार्म को एक लाख डॉलर की बचत भी हो रही है। इसके अलावा वातावरण में बढ़ते ग्रीन हाउस इफेक्ट्स को दूर करने में भी यह सहायक है। युनिवर्सिटी आफ टैक्सास के वैज्ञानिक ऑस्टिन ने अपने अध्ययन से बताया है कि व्यापक पैमाने पर बायोगैस के उत्पादन से हम पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचा सकते हैं, साथ ही इकानॉमिकली और एनर्जी एफिशियेंट सिस्टम बना सकते हैं। इस तकनीक की कोई सीमा नहीं है। यह तो एक शुरुआतभर है। अमेरिकन काउंसिल ऑन रिन्युएबल एनर्जी के अनुसार अमेरिका में लगभग 100 काउ पावर फेसिलिटी हैं। एनर्जी इन्फार्मेशन एडमिनिस्ट्रेशन के अनुसार 2012 तक बायोमास से लगभग 30 प्रतिशत रिन्युएबल एनर्जी प्राप्त होने का अनुमान है। अकेले जर्मनी में 2010 तक 6800 एनएरोबिक डायजेस्टर फेसिलिटी उपलब्ध थी।

ह्वह्व (न्यूयार्क डेली न्यूज से साभार)

प्रकाशक :
नरेन्द्र दुबे, कार्याध्यक्ष, गोविज्ञान भारती
द्वारा मुंबई सर्वोदय मण्डल, 299, ताड़देव रोड, नानाचौक
मुंबई-400 007, फोन : (022) 23872061

डी-37, सुदामा नगर, इन्दौर-452 009
फोन : 0731-2489475, मो.: 97542 20781
www.govigyan.org ● e-mail : vinobaji1@gmail.com
prof.pushpendra@gmail.com

मुद्रण : श्रीकृति ग्राफिक्स, बी-133, सुदामानगर, इन्दौर
मो.: 98269 51703

आजीवन शुल्क : 1,000 ● वार्षिक शुल्क : रु. 50 ● एक प्रति : रु. 5

गोविभा
रजि. MPHIN/2003/11246
पोस्टल रजि.आई.सी.डी. (एम.पी.) 1106/12-14

सेवा में,